आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :– कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:–प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2632 • उदयपुर, गुरुवार 10 मार्च, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

पुलिसकर्मी को लगा कृत्रिम पैर

मध्यप्रदेश के रतलाम निवासी 56 वर्षीय सहायक सब इंस्पेक्टर घटश्याम बियावट का 7 जून 2017 को सड़क दुर्घटना में मोटर साईकिल से गिरकर दाया पैर क्षतिग्रस्त हो गया। आस–पास के लोगों ने उसे रतलाम पहुंचाया, जहां पांव का लेगामेन्ट सही करने के लिए ऑपरेशन कर प्लास्टर चढ़ा दिया गया। महीनों तक इलाज चलता रहा ना तो दर्द से राहत मिली न हड्डी जुड़ी। तब थक–हार परिवार वाले इंदौर के एक नामी हॉस्पीटल ले गए। वहां की चिकित्सा करने वाली डॉक्टर्स टीम ने पैर की नाजुक हालात देखकर कहा कि पांव के जख्म में पस रूक नहीं रहा है। इन्हे गेंगरीन हो गया है। पांव काटना होगा। दिनांक 16 मार्च 2018 को घुटने के नीचे से दांया पांव काट दिया गया। देश समाज की सेवा में 24 घंटे तत्पर रहने वाले पुलिस कर्मी की जिन्दगी सहारे की मोहताज हो गई। एक पैर से ड्यूटी निभाना भी तकलीफ देह हो गया। कुछ दिन पूर्व एक व्यक्ति से उनका मिलना हुआ, उसने कहा कि मैंने उदयपुर नारायण सेवा संस्थान से कृत्रिम पैर लगवाया मुझे बहुत राहत मिली है। यह सुनते ही एएसआई घनश्याम में भी उम्मीद जगी और वे उदयपुर आ गए। संस्थान के डॉ. मानस रंजन साहू ने मेजरमेन्ठ लेकर मोड्युलर लिम्ब तैयार कर घनश्याम को पहनाया। उन्हें चलने की ट्रेनिंग दी गई। अब वे धीरे–धीरे बिन सहारे चलने लगे हैं। हल्का और किस्म का कृत्रिम पैर पाकर एएसआई घनश्याम व परिजन बेहद खुश हैं।

पुणे (महाराष्ट्र), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत् कर रहा है।
ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 14 फरवरी 2022 को अंकुश राव लांगडे नाट्य सभागृह भोंसरी रोटरी में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता क्लब डायनोमिक भोंसरी राजगुरुनगर रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 42, कृत्रिम अंग वितरण 27, कैलिपर माप वितरण 10 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् महेश दादा लांगडे (विधायक, भोंसरी), अध्यक्षता श्रीमान् प्रशान्त जी देशमुख (माजी प्रांत डिस्ट्रीक), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् नितिन जी लांगडे (नगर सेवक, भोंसरी), श्रीमान् अशोक जी पंगारिया (रोटरी क्लब डायनामिक अध्यक्ष, भोंसरी), श्रीमान्

अजीत जी वालुंज (अध्यक्ष, रोटरी क्लब ऑफ राजगुरुनगर) रहे।
शिविर टीम में श्री मुकेश जी (शिविर प्रभारी), श्री सुरेन्द्र सिंह जी झाला (आश्रम प्रभारी पुणे), श्री भरत जी भट्ट , श्री देवीलाल जी मीणा, श्री हरीश जी रावत (सहायक), भगवती जी पटेल (टेक्नीशियन) ने भी सेवायें दी।

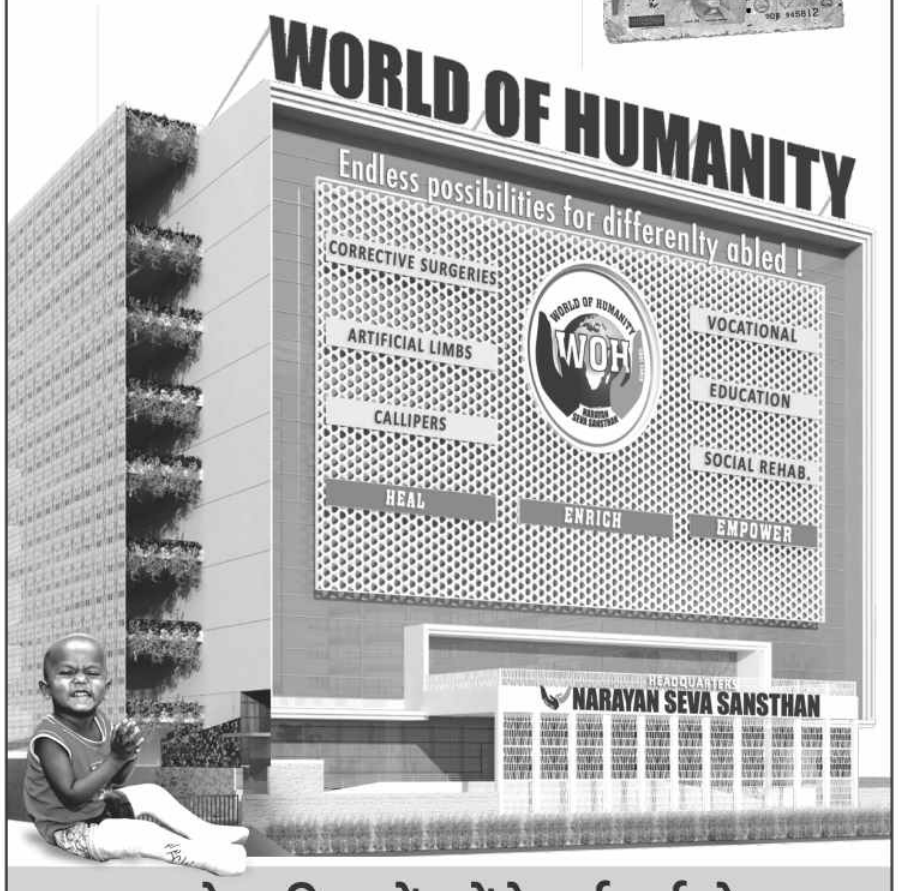

1,00,000 We Need You !
से अधिक सहयोग देकर, दिव्यांगों के सपनों को करें साकार
अपने शुभ नाम या प्रियजन की स्मृति में करायें निर्माण

मानवता के मन्दिर में बनेंगे कई वार्ड-सेवा कक्ष
* 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल * 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त* निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी * भारत की पहली निःशुल्क सेन्ट्रल फेब्रीकेशन यूनिट * प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों को निःशुल्क आवासीय व्यावसायिक प्रशिक्षण

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
Cont. : 0294-6622222 , +917023509999 (WhatsApp)

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity
SINCE 1985

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन
एवं कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर
दिनांक व स्थान

13 मार्च 2022 : बजरंग आश्रम, हॅसी, हरियाणा

13 मार्च 2022 : चन्द्रपुर

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन, नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

बांस और आम

एक जगंल में बांस के पेड़ के साथ आम का भी पेड़ था। बांस का पेड़ कद में लंबा और आम का पेड़ छोटा था। यह देखकर बांस का पेड़ अक्सर आम का मजाक उड़ाता और कहता था कि अरे आम मैं कितना बड़ा हो चला, कितनी तेजी से बढ़ा और तुम हो, जो इतनी आयु में भी छोटे ही बने हुए हो। आम बोला कि यह तो हर किसी की अपनी–अपनी प्रकृति है।

कद ऊंचा हो जाने से या शरीर विशाल होने से कुछ नहीं होता। छोटा होने का अर्थ नहीं कि वह मान व बड़े काम का नहीं होता। इसी तरह लंबे होने का अर्थ यह नहीं कि वह छोटे काम को घृणा की नजर से देखे, किंतु बांस को उसकी बात समझ में नहीं आई। कद के घमंड में चूर वह बोला कि तुम मेरे कद से जलते हो, इसलिए मुझे ऐसी बातें सुना रहे हो। भला मैं छोटा काम क्यों करुं। कुछ वक्त बाद आम पर मंजरियां लगी और कुछ दिन बाद वह फलों से लद गया। फलों से लदा होने की वजह से वह झुक गया और बांस दिनों दिन लंबा होकर सूखता चला गया, किंतु उसका अभिमान अभी भी कम नहीं हुआ था। एक दिन वह आम को देखकर बोला कि मुझे देखो मैं दूर से नजर आ रहा हूं और एक तुम हो जो फलों से लदकर झुके जा रहे हो तथा छोटे होते जा रहे हो।

अभी उसकी बातें खत्म भी नहीं हुई थी कि कहीं से यात्रियों का झुंड वहां आयां। उन्होंने आम के वृक्ष के फलों से लदा हुआ देखा, तो वहीं डेरा डाला और विश्राम करने लगे। रात होने पर ठंड से बचाव के लिए उन्होंने आग जलाने की सोची और पास ही खड़े बांस के वृक्ष को काटकर लकड़ियों का ढेर लगा दिया। कुछ देर में बांस का पेड़ राख हो गया। आम का वृक्ष अभी भी शांत था और राहगीरों को अपनी छांव तले विश्राम दे रहा था, जबकि अभिमानी बांस का अंत हो चला था।

मुसीबत से डरकर भागो मत, उसका सामना करो

एक बार बनारस में स्वामी विवेकानन्द जी मां दुर्गा जी के मंदिर से निकल रहे थे कि तभी वहां मौजूद बहुत सारे बंदरों ने उन्हें घेर लिया। वे उनसे प्रसाद छीनने लगे वे उनके नजदीक आने लगे और डराने भी लगे। स्वामी जी बहुत भयभीत हो गए और खुद को बचाने के लिए दौड़ कर भागने लगे। वो बन्दर तो मानो पीछे ही पड़ गए और वे भी उन्हें पीछे पीछे दौड़ने लगे। पास खड़े एक वृद्ध संन्यासी ये सब देख रहे थे, उन्होनें स्वामी जी को रोका और कहा– रुको! डरो मत, उनका सामना करो और देखो क्या होता है? वृद्ध सन्यासी की ये बात सुनकर स्वामी जी तुरंत पलटे और बंदरों की तरफ बढने लगे। उनके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब उनके ऐसा करते ही सभी बन्दर तुरंत भाग गए। उन्होनें वृद्ध सन्यासी को इस सलाह के लिए बहुत धन्यवाद किया। इस घटना से स्वामी जी को एक गंभीर सीख मिली और कई सालों बाद उन्होंने एक संबोधन में इसका जिक्र भी किया और कहा– यदि तुम कभी किसी चीज से भयभीत हो, तो उससे भागो मत, पलटो और सामना करो। वाकई, यदि हम भी अपने जीवन में आये समस्याओं का सामना करें और उससे भागें नहीं तो बहुत सी समस्याओं का समाधान हो जायेगा!

विचार देते हैं हौसला, समझदारी और शक्ति

दो तिनके एक नदी में गिर गए। दोनों एक ही हवा के झोंके से उड़कर एक ही साथ नदी तक आ पहुंचे थे। दोनों की परिस्थितियां समान थीं। परंतु दोनों की मानसिक स्थिति एक न थी। एक पानी में बह रहा था सुख–पूर्वक। तैरने का आनंद लेते हुए, तो दूसरे को किनारे पर पहुंचने की जल्दी थी। वह बड़े प्रयास करता। पूरी ताकत लगाता, परंतु नदी के शक्तिशाली बहाव के आगे बेचारे तिनके की ताकत ही क्या थी। उसके सारे प्रयास व्यर्थ होते रहे। बहता तो वह उसी दिशा में रहा, जिस दिशा में नदी बह रही थी, परंतु पहले तिनके की तरह सुखपूर्वक नहीं, बल्कि दुखी मन से। कुछ आगे जाने पर नदी की धारा धीमी हुई। पहला तिनका दूसरे से बोला– आओ मित्र, अब प्रयास करने के लिए समय अनुकूल है। चलो, मिलकर कोशिश करें।

किनारे पर घास उगी है, जो नदी के बहाव को रोक भी रही है। थोड़ा प्रयास करने से हम अपनी दुनिया में पहुंच जाएंगे। परंतु दूसरा तिनका इतनी मेहनत कर चुका था कि वह थक गया था। वह आगे प्रयास न कर सका। परंतु पहला तिनका अपने मित्र को मुसीबत में छोड़कर किनारे नहीं गया। खुद को उससे उलझा दिया, जिससे तिनके की कुछ शक्ति बढ़ी। फिर जोर लगाया और एक लंबी घास को किसी तरह पकड़ लिया। कुछ देर सुस्ताने के बाद आखिरकार दोनों धीरे–धारे सूखे किनारे पर पहुंच ही गए।

पहला तिनका पुराने साथियों की मीठी यादों से खुश था। किनारे नए मित्रों के बीच प्रसन्न था। दूसरा तिनका अब भी अपने पुराने स्थान के साथी तिनकों से बिछड़ने के कारण उदास, डूबने की याद से परेशान और भीग जाने से दुखी था।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

माता भरत के मन की थाह नहीं ले पायी। कभी–कभी बहुत प्रेम होता है ना। अरे, अणारी मन री थाह लेणो मुश्किल है। ये तो भरतजी जैसा भाई है। ये तो लक्ष्मणजी जैसा भ्राता है। ये हनुमानजी जैसा दास है। हाँ, हनुमान जी महाराज तो कथा में पधार ग्या। जहाँ भी सत्संग होता है। जहाँ चित्रकूट होता है। जहाँ भी प्रेम होता है, वहाँ हनुमानजी महाराज आ ही जाते है

हनुमानजी, भगवान है। हनुमानजी पार ब्रह्म परमात्मा है। एकादश रुद्र के अवतार है। ऐसे हनुमानजी महाराज, जहाँ प्रगट होते हैं। जब तुलसीदासजी हुलसी के बेटे, बांदा के रहने वाले। जब सोचते हैं – कल भी भगवान आये थे राम भगवान। मैं पहचान नहीं पाया। हनुमान जी को प्रार्थना की– आप मुझे पहचान बता देना। और हनुमानजी वृक्ष के ऊपर। सुन्दरकाण्ड में प्रसंग आता है।

तरु पल्लव महुँ रहा लुकाई।
करइ बिचार करौं का भाई।।

ऐसे ही यहाँ भी तरु के पल्लव के बीच में बिराज गये। और जब भगवान श्रीराम लक्ष्मण पधारें तो हनुमानजी की वाणी मुखर हो गयी।

चित्रकूट के घाट पर,
भई सन्तन की भीर।
तुलसीदास चंदन घिसे,
तिलक करे रघुवीर।।

ऐसे चित्रकुट धाम में कामतनाथ पर्वत पर, राम भगवान के चरणो में गिर पडे हैं। जैसे दण्ड गिर पड़ा त्राही माम्, त्राही माम्, त्राही माम्, भईया बड़ी गलती हुई, मैं बड़ा पापी। मुझे कुमाता ने, कैकेयी ने जन्म दिया। मेरी वजह से आपको कष्ट उठाना पड़ा। आपको अयोध्या से पैदल चलकर यहाँ पधारना पड़ा। ये मेरी सीतामाता, जनकजी की पुत्री, वैदेही की पुत्री को भी आना हुआ। मेरे भ्राता लक्ष्मण ने कितना कष्ट पाया। भईया मुझे क्षमा कर दो। राम भगवान ने कंठ से लगा दिया। बहुत सरलता से बोल उठते हैं।

धन्यवाद नारायण सेवा

मेरा नाम देवीलाल खटीक है, वल्लभनगर कर रहने वाला हूँ। मेरी बच्ची का नाम आयुषी खटीक है। इसके बचपन से उसके पैर का पंजा नहीं था। पैर बना ही नहीं था। पैर में भी कहीं गठान थी। तो फिर नारायण सेवा संस्थान का पता लगा।, किसी ने कहा कि नारायण सेवा में इसका ऑपरेशन हो जायेगा हम यहां चेकअप कराने ले के आये थे। फिर डॉक्टर ने कहा कि, इसका ऑपरेशन करना पड़ेगा। फिर बाद में चलने लग जायेगी। फिर यहां पे ऑपरेशन किया, फिर बाद में पैर बनाया था।

आज ये व्यवस्थित चल रही है। पढ़ाई भी करने जा रही है। दो– तीन किलोमीटर चल भी रही है। सरलता से चल देती है। नारायण सेवा का मैं बहुत– बहुत आभारी हूँ कि इस बच्ची को इस लायक बनाया है कि, पैर दिया है। मैं धन्यवाद करता हूँ नारायण सेवा संस्था का।

सम्पादकीय

शिव जी को आदिदेव कहते हैं। इन्हें महादेव भी कहते हैं। इन्हें भोलेनाथ भी कहा जाता है। आदिदेव इसलिये कि इनकी उत्पति का कोई अनुमान नहीं है। महादेव इसलिये कि इनकी महानता सर्वोपरि हैं। भोलेनाथ इसलिये कि शीघ्र रीझ जाते हैं। यह तो हुई धार्मिक मान्यता।

शिव का अर्थ है कल्याण। कल्याण का भाव यानी शिव भाव। आज की दुनिया में कल्याण भाव का लोप होता चला जा रहा है। स्व के सोच के दायरे से व्यक्ति बाहर आये तब तो पर की सोचे जब पर की सोच का उदय होगा तभी तो कल्याण – भाव जागेगा।

मैं और मेरा यह तो स्वार्थ – भाव है। जहाँ स्वार्थ भी परार्थ में बदल जाता है वहीं से शिवत्व का शुभारंभ होता है। यो तो कंकर – कंकर में शिव की परिकल्पना की गई है। यानी कि हरेक रचना शिवत्व का ही प्रतीक है । तो मानव इस शिवत्व से वंचित होता सा क्यों लगता है?

हम अपने में इतने खो गये है कि शिव – भाव, कल्याण – भाव, परार्थ– भाव, शिथिल हो गया है। इसे पुनर्जागृत करना ही सही अर्थो में शिवरात्रि का प्रयोजन है। हम भी शिव को स्वयं में धारें , हरेक को कष्टों में उबारें।

कुछ काव्यमय

शिव जैसा स्वभाव बनालें
तो फिर कहां पीड़ित मानवता ?
शिव जैसे दानी बन जायें,
तो फिर कहां अभावी– सत्ता।
शिव – संकल्प साधना होगा,
तभी धरा पर सुख सरसेगा।
चारों ओर शांति व्यापेगी,
आनन्द हर आंगन बरसेगा।

अपनों से अपनी बात

कृपानिधान की कृपा है..

उदयपुर से 130 कि.मी. दूर पानरवा के एक केम्प की बात भूलाये नहीं भूलती। अति वृद्ध एवं बहुत गरीब सी दिखने वाली एक माई को जब जर्सी देने लगे तो उसने अपनी छोटी सी गांठ को कस कर दबा लिया। हमने कहा "माँजी यह गांठ नीचे रख दीजिये, ताकि आराम से आप कपड़ा ले सके।" माँजी ने गांठ और कस कर दबाई। हमारे आश्चर्य का समाधान करते हुऐ एक सज्जन ने बताया, इसकी कुल जमा पूँजी इसी गांठ में बंद है। यहां से तीस कि.मी. दूर नदी के किनारे रहती है, झोंपड़ा भी नहीं है। हाय–हाय यह माँजी मात्र एक कपड़ा लेने के लिये 30 कि.मी. दूर पैदल चल कर आयी है।

शुरू–शुरू में ये वनवासी बंधु सभी को शंका की दृष्टि से देखते हैं इनको लगता है कि लोग आते हैं, भाषण

आदि करके चले जाते हैं। जब इनको यह विश्वास होता है कि ये वास्वत में हमारे शुभचिंतक है तो बात को ध्यान से सुनते हैं, और मानते हैं।

संस्थान का 81वां शिविर 25–6–89 को इसवाल में आयोजित हुआ। वहाँ एकत्रित हुए आस पास के क्षेत्रों से 2000 से अधिक बंधु–बांधव माताएँ बहिने व बच्चे। चिकित्सा के लिए गये डॉ. एन.एम. दुग्गड़ एवं डॉ. महेश दशोरा ने 206 बीमारों की चिकित्सा जांच कर लगभग 2100 रु. की दवाइयाँ प्रदान की। मेडिकल प्रकल्प हेतु चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी का सौजन्य रहा। वनवासियों ने जीवन भर के लिए शराब व मांस का परित्याग किया। हर बार की तरह इन बन्धुओं को शिक्षा, स्वच्छता आदि के विभिन्न पहलुओं की तरफ कई उदाहरणों से बताया। इनके रीति रिवाज, इनकी उन्मुक्त हँसी, सन्तोष की गहरी भावना हम शहरवासियों को भी बहुत कुछ सिखा देती है।

रामचरित मानस में एक अर्धाली आती है "गिरा अनयन नयन बिनु बानी" जीभ के आंखें नहीं कि वह देख सके, और हमारे ये चक्षु, इनके जीभ नहीं कि ये कह सके। कई मीठे अनुभव, हृदय को अन्दर से छू जाने वाली कई बातें ऐसी हो जाती है कि बार–बार कृपानिधान की कृपा का आभास होता है।

– कैलाश 'मानव'

पुष्प बनें, पाषाण नहीं

एक राजा को विवाह के बहुत वर्षों पश्चात् जब पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई तो राजा अत्यंत प्रसन्न हुए। राजा ने उसका लालन–पालन अत्यंत प्यार से और कोमलता से किया। इस प्रकार के लालन–पालन से राजकुमार अत्यंत दुर्व्यवहारी हो गया। वह किसी से आदर से बात नहीं करता था। राजा इस बात से चिन्तित रहने लगे। एक दिन एक मंत्री ने राजा को एक जंगल में रहने वाले महात्मा के पास राजकुमार को ले जाने की सलाह दी।

राजा अपने पुत्र को लेकर जंगल में उन महात्मा के पास गए। महात्मा के पास जाकर राजा ने उन्हें सारा वृतांत कह सुनाया। महात्मा ने कहा –राजन्! आप चिन्तित मत होइए। आप राजपुत्र को यहीं छोड़ जाइए। मैं इनका व्यवहार परिवर्तित कर दूँगा। राजा पुत्र को महात्मा जी के पास छोड़कर चले गए। राजकुमार के गुरुकुल में प्रथम दिवस पर महात्मा ने कहा–यदि भोजन करना है तो माँग कर लाना पड़ेगा। राजकुमार ने माँग कर लाने से मना कर दिया। महात्मा ने राजकुमार को उसके हाल पर छोड़ दिया। राजकुमार उस दिन भूखा रहा। दूसरे दिन पुनः महात्मा ने राजकुमार से कहा – क्या आज भी भूखे रहना चाहते हो। राजकुमार ने कहा–नहीं। आज मैं माँगकर लाऊँगा। राजकुमार अन्य शिष्यों के साथ माँगने के लिए पास के गांव में चला गया, किन्तु राजसी प्रवृति होने के कारण माँगने में विनम्रता नहीं थी। इस कारण उसे पर्याप्त भिक्षा नहीं मिली। राजकुमार ने महात्मा जी से कहा–दूसरे शिष्यों को तो भिक्षा पूरी मिली और उनका पेट भर गया, किंतु मुझे आधे से भी कम में संतुष्ट होना पड़ा। महात्मा जी ने राजकुमार को समझाया कि इस बार विनम्रता से भिक्षा माँगना, अवश्य मिलेगी। राजकुमार ने गुरुजी की बात मानकर धीरे–धीरे अपने व्यवहार को विनम्र और भाषा को मृदु बनाया। इससे राजकुमार के व्यक्तित्व में काफी परिवर्तन आ गया।

एक दिन महात्मा जी व राजकुमार कहीं जा रहे थे। बीच राह में एक बगीचा आया। जिसमें अलग–अलग प्रकार के फल–फूल व पेड़–पौधे लगे हुए थे। गुरुजी ने राजकुमार को एक फूल तोड़कर लाने को कहा–राजकुमार फूल तोड़कर ले आया। महात्मा जी ने राजकुमार को फूल सूंघने को कहा। राजकुमार ने वैसा ही किया। महात्मा ने पूछा – फूल से क्या प्राप्त हुआ?

राजकुमार ने कहा – मीठी–मधुर महक आ रही है।

महात्मा ने कहा – क्या ये मधुर महक और लेते रहना चाहोगे?

राजकुमार ने स्वीकारोक्ति दी। फिर महात्मा ने उसे किसी पेड़ के पत्ते तोड़ कर लाने को कहा। राजकुमार ने वैसा ही किया। महात्मा ने पूछा –ये पत्ते किस पेड़ के हैं?

राजकुमार ने कहा –नीम के।

महात्मा जी – खाना चाहोगे?

राजकुमार – नहीं।

तब महात्मा जी ने समझाया कि यदि तुम अपने व्यक्तित्व को फूल के समान खुशबूदार बनाओगे तो सभी तुम्हारे पास आना चाहेंगे और अगर नीम के समान कड़वे बनोगे तो कोई भी तुम्हारे पास नहीं आना चाहेगा। इस सीख का राजकुमार के मन पर गहरा असर हुआ और वह पूरी तरह बदल गया। महात्मा ने राजकुमार को राजा को सौंपते हुए कहा कि अब यह आपका राज्य संभाल लेगा। राजा अत्यंत प्रसन्न हो गए।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कैलाश की एक आंख बचपन से ही खराब थी। एक मित्र सोहनलाल पाटनी ने उसे बताया कि पास ही बीसलपुर गांव में राजमल जैन नामक एक समाजसेवी हैं जो आंखों के केम्प लगाते हैं। दूर दूर से बड़े बड़े डॉक्टर केम्प में आकर आंखों का ऑपरेशन, इलाज करते हैं। कैलाश ने राजमल को एक पोस्टकार्ड डाला तो तुरन्त जवाब आ गया कि बीसलपुर आ जाओ।

कैलाश राजमल से मिल कर और उनकी सेवा भावना देख कर बहुत प्रभावित हुआ। राजमल व्यवसायी थे, उनका कार्य भिवण्डी, मुम्बई में चलता था मगर उन्होंने अपना जीवन जनसेवा को समर्पित कर दिया था, भैरव नेत्र यज्ञ समिति के अन्तर्गत वे नेत्र रोग शिविरों का आयोजन करते थे। एक बड़े नेत्र रोग विशेषज्ञ को कैलाश ने अपनी आंख दिखाई। डॉ. ने उसे राजकोट आने को कहा। नई नई नौकरी थी, अभी राजकोट जाना संभव नहीं था मगर स्वयं की आंख मानो उसके लिये गौण हो गई और राजमल के सेवा कार्य से वह सम्मोहित हो गया।

रात को सभी लोग साथ बैठे बातें कर रहे थे तभी किसी का फोन आया। फोन सुनकर यकायक राजमल उदास हो गये। कैलाश ने पूछा तो बताया कि वे समीप के एक गांव में सात दिन का शिविर आयोजित कर रहे हैं, मगर उनके साथ जाने वाले एक कार्यकर्ता को मलेरिया हो गया है इसलिये उसने आने से मना कर दिया है। राजमल को सभी लोग श्रद्धा से भाईसा कहते थे। उनके चेहरे की उदासी देख कर कैलाश का मन द्रवित हो उठा, वह झट से बोल उठा– मैं चलूं भाईसा आपके साथ ? 6 दिन पोस्ट ऑफिस से छुट्टी ले लूंगा। कुछ ही देर पहले स्वयं के आंखों के इलाज के लिये नई नई नौकरी का बहाना करने वाला सेवा कार्य के लिये छुट्टी लेने किस तरह तत्पर हो गया यह आश्चर्यजनक था। कैलाश की बात से भाईसा बहुत प्रसन्न हो गये और उसे अपने साथ ले जाने को तत्पर हो उठे। अगले दिन कैलाश अपने जीवन में पहली बार किसी कार में बैठा। भाईसा के पास मारूति की छोटी कार थी। उसी में बैठकर वे शिविर की तरफ चल पड़े।

चाय को मीठा करते हैं ये चार नेचुरल स्वीटनर्स

चाय में चीनी मिलाने के नुकसान के बारे में सभी का पता चल चुका है। अब अधिकतर लोग चाय में कम चीनी पीना चाहते हैं। जानते हैं चार नेचुरल स्वीटनर्स के बारे में जो कई दूसरे फायदे भी देते हैं।

गुड़ : अगर आप वेट लॉस करना चाहते हैं और चाय नहीं छोड़ सकते हैं तो आप गुड़ वाली चाय पीएं। गुड़ की मिठास से चाय का स्वाद बदल जाता है और रंग भी। साथ ही गुड़ में काफी ज्यादा मात्रा में एंटीऑक्सिडेंट्स भी होते हैं और ये शरीर से कैमिकल्स भी दूर करता है।

सौंफ की चाय : चाय में सौंफ मिला सकते हैं। सौंफ सेहत के लिए काफी ज्यादा फायदेमंद होती है। चाय पीने के बाद गैस होने की समस्या होती है तो आप चाय में सौंफ मिलाकर इसका इस्तेमाल कर सकते हैं।

मुलेठी : आयुर्वेदिक औषधियों में मुलेठी का इस्तेमाल किया जाता है। गले में दर्द से भी मुलेठी आराम दिला सकती है। इसे बनाने के लिए चाय में लौंग और दालचीनी का इस्तेमाल कर सकते हैं। इस तरह यह हर्बल चाय का काम करती हैं।

शहद : शहद सेहत के लिए काफी फायदेमंद होता है। आप अपनी चाय में शहद मिला सकते हैं। यह नेचुरल स्वीटनर का काम करता है। शक्कर की तुलना में शहद बहुत ज्यादा अच्छा भी साबित होता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

कैलाश अग्रवाल

अग्रसेन जी महाराज के अग्रवाल जाति में नहीं जन्मे होते तो कोठारी हो जाते, ब्राह्मण देवता हो जाते, क्षत्रिय हो जाते, कुछ भी हो जाते, जैन साहब हो जाते। क्या फर्क पड़ रहा है? कपड़ों की पहचान ही सब कुछ नहीं है, इस मन की पहचान कौन करेगा? मन की पहचान कोई दूसरा करे या नहीं करे, स्वयं आत्मानंद में डूबे रहना चाहिये। अपने अन्दर का आनन्द ऐसा सुख जो क्षणिक सुख नहीं है, ऐसा सुख जो कुछ समय का सुख नहीं है, अनित्य सुख नहीं है। नित्य सुख है, परमानन्दम् सुख है, रसामृत है–लाला। ऐसा परमानन्द की कृपा हो गयी। परम् पूज्य रतनलाल जी डीडवानिया साहब इनका नाम पहले भी लिया गया, मेरे मन बस गये। महान रतनलाल जी डिडवानिया साहब लक्ष्मणगढ़ सीकर जिले के निवासी मुम्बई में जाकर व्यापार किया, बहुत महान परिवार। हमारे वित्तमंत्री जो अन्तरिक्ष से आशीर्वाद दे रहे हैं। भारत सरकार के अरूण जी जेटली साहब कभी उनके भी वकील हुआ करते थे। उनके चार्टेर्ड एकाउण्टेंट वो ही हुआ करते थे।

ऐसे रतनलाल जी डीडवानिया साहब जिन्होंने सेक्टर 06 में भी हॉस्पिटल बनाया, बहुत अच्छा हॉस्पिटल बनाया। उसका उद्घाटन करने के लिये वो स्वयं और उनके सुपुत्र विमल जी डिडवानिया साहब पधारे थे। उसी दिन मैंने चर्चा की, सेवातीर्थ बड़ी क्षेत्र में भी एक हॉस्पिटल बनावें। उन्होंने कहा बस में एक टेलिफोन पर कैलाश और प्रकाश से बात कर लेता हूँ, वो हाँ भरेंगे। उन्होंने हाँ भरी, और दूसरे दिन डीडवानिया हॉस्पिटल सेवातीर्थ में बनने लग गया।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 382 (कैलाश 'मानव')

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

पैरालिंपिक कमेटी ऑफ इण्डिया

21वी राष्ट्रीय पैरा तैराकी प्रतियोगिता 2021–22

सम्पूर्ण भारत वर्ष के सभी राज्यो के 400 से अधिक
दिव्यांग (श्रवण बाधित , प्रज्ञाचक्षु, बोधिकअक्षम एवं अंग विहीन)
प्रतिभागी इस प्रतियोगीता में भाग लेंगे।
कृपया समारोह में पधार कर दिव्यांग प्रतिभाओं का हॉसला बढाए।

उद्घाटन समारोह
दिनांक : 25 मार्च, 2022
समय : प्रात: 11.30 बजे

समापन समारोह
दिनांक : 27 मार्च, 2022
समय : प्रात: 11.30 बजे

स्थान : तरण ताल, महाराणा प्रताप खेलगांव, उदयपुर (राज.)

आयोजक
मुख्य आयोजक : नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर
सह आयोजक :महाराणा प्रताप खेलगांव सोसायटी, उदयपुर

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com•आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023